समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ फरवरी २०१४ ● वर्ष : १७ ● अंक : ०८ (निरंतर अंक : २००)

मासिक समाचार पत्र

शंकराचार्य श्री निश्चलानंदजी

श्री नित्यानंदजी

श्री हरपालसिंहजी

श्री अशोक सिंहलजी

श्री कृपारामजी

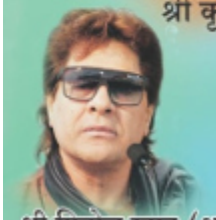

श्री फिरोज खान (अर्जुन)

जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी

श्री परमात्मानंदजी

श्री चक्रपाणिजी

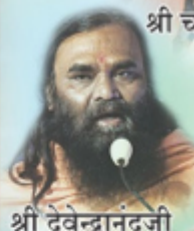

श्री देवेन्द्रानंदजी

डॉ. जयंत आठवलेजी

श्री देविन्दरसिंहजी

श्री मुकेश खन्ना

पूज्य बापूजी ने वर्षों की साधना, तपस्या और तितिक्षा के बाद जो पाया, उसे संस्कृति और समाज के उत्थान में लगाया है ।

यही कारण है कि इतने कुप्रचार के बाद भी संत-समाज, धार्मिक-सामाजिक संगठनों के प्रमुख, तटस्थ बुद्धिजीवी वर्ग एवं करोड़ों लोग आज भी पूज्य बापूजी के समर्थन में हैं ।

''धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में संत आशारामजी बापू सबसे आगे हैं । उनके खिलाफ किया गया केस पूरी तरह बोगस है । मेरे कानूनी सलाहकारों का यह फैसला है ।'' - प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

सावधान ! बाल-युवा पीढ़ी बन सकती है...

Teenage TimeBomb

विदेशों में बच्चों द्वारा हो रहे अपराधों में काफी वृद्धि हुई है। अपराध करनेवाले बच्चों की आयु बहुत कम है लेकिन ये अपराध विज्ञानियों (ऊीळाळपेश्रेसळीी) को अभी से भयभीत और चिंतित कर रहे हैं । इनका अधिकतर समय गलियों में भटकने और हिंसात्मक टीवी कार्यक्रम देखने में गुजरता है । नॉर्थ-ईस्टर्न यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध अपराध वैज्ञानिक जेम्स फॉक्स का कहना है कि ''कुछ वर्षों के बाद ये बच्चे ऐसे मानसिक रोगी बन जायेंगे जो आक्रामक, हिंसक और असामाजिक विचार व व्यवहार करनेवाले तथा पश्चात्ताप एवं सहानुभूति की भावना से रहित होंगे । यदि इनको बंदूकें व नशीली दवाएँ प्राप्त हो जायेंगी तो ये अत्यंत खतरनाक साबित हो सकते हैं।''

वेलेंटाइन डे की परम्परा को बढ़ानेवाले देशों की बाल-युवा पीढ़ी की दुर्दशा के बारे में प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के राजनीति के प्रोफेसर डिलुलियो कहते हैं : ''ये बच्चे 'नैतिक दरिद्रता' में पलकर विकसित हुए हैं क्योंकि इनको माता-पिता, शिक्षकों, धर्मगुरुओं से यह ज्ञान नहीं मिला कि सही क्या है और गलत क्या है और उनका निःस्वार्थ प्रेम नहीं मिला ।''

तबाही की ओर...

कैथरीन मेयर (पत्रकार, टाइम मैगजीन) लिखती हैं : 'हिंसात्मक अपराध, अविवाहित गर्भवती किशोरियाँ, शराब और नशीली दवाओं के व्यसन की महामारी युवाओं को तबाही की ओर ले जाने का भय दिखा रही है । अविवाहित गर्भवती किशोरियाँ व यौन संक्रमित रोगों में ब्रिटेन पूरे यूरोप में सबसे आगे है।'

किड्स कम्पनी, जो लंदन के दरिद्रतम बच्चों की सेवा करनेवाली एक संस्था है, की संस्थापक कैमिला कहती हैं : ''यदि मैं सरकार में होती तो आतंकवादियों के बम से नहीं, इस (टीनेज टाइम बम) से चिंतित होती।'' (टीनेज = किशोर)

इस 'टीनेज टाइम बम' को निष्क्रिय करने का उपाय क्या है ?

प्रोफेसर डिलुलियो का कहना है कि ''धार्मिक संस्थाओं को सुदृढ़ बनाया जाय, जिससे बच्चों और युवाओं के जीवन में अच्छे संस्कार डाले जायें ।'' इसलिए यदि पूज्य बापूजी जैसे संतों-महापुरुषों द्वारा दिये जा रहे संस्कारों, शिक्षाओं का लाभ समाज लेगा तो ही यह 'टीनेज टाइम बम' निष्क्रिय हो सकेगा अन्यथा विदेशों की जो स्थिति है वही स्थिति भारत की भी हो सकती है।

भारत में ऐसे ज्ञानी महापुरुष सिर्फ उपदेश ही नहीं देते बल्कि हजारों 'बाल संस्कार केन्द्रों' के द्वारा बच्चों में दिव्य संस्कारों का सिंचन भी करते हैं, 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' जैसी पुस्तकों के राष्ट्रव्यापी प्रचार के द्वारा युवा पीढ़ी को पाश्चात्य कुसंस्कारों की आँधी से चरित्रभ्रष्ट होने से बचाते भी हैं और युवा वर्ग को वेलेंटाइन डे जैसी महामारी से बचाने के लिए 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' जैसा अक्सीर इलाज भी बताते हैं -

''१४ फरवरी को लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे को फूल देते हैं । एक-दूसरे को फूल देना, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ/करती हूँ...' कहना बड़ी बेशर्मी की बात है । इससे लोफर-लोफरियाँ पैदा हो रहे हैं । यह गंदगी विदेश से आयी है । इस विदेशी गंदगी से बचाकर हमें भारतीय संस्कृति की सुगंध से बच्चे-बच्चियों को सुसज्ज करना है ।''

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक :०८
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक :२००)
१५ फरवरी २०१४ मूल्य :३.५०/-

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :

(१) वार्षिक : ₹ ३०
(२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११०
(४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :

(१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन :(०७९) ३९८७७७३९/८८,
२७५०५०१०/११.

e-mail :1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना सदस्य क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे

मंगलमय — www.ashram.org पर उपलब्ध

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

१) टीनेज टाइम बम २
२) आत्मशिव को कैसे पायें ? ४
३) तूफान का रुख मोड़ दें, ऐसे वीर हैं हम... ६
४) विशाल संत-सम्मेलन, जोधपुर ७
५)विराट संत-सम्मेलन, अहमदाबाद १०
७) संत-सम्मेलन, राजनांदगाँव (छ.ग.) ११
८) हमारी भाषा हमारी पहचान है १४
९) अन्यायपूर्वक तोड़ा गया जबलपुर आश्रम का निर्माणकार्य १५
१०) सियासी शतरंज पर आशारामजी बापू – हरिश्चन्द्र मिश्र १६
११) एक अप्रतिम पुस्तक है दिव्य प्रेरणा-प्रकाश – डॉ. अक्षय मिश्रा १७
१२) कर्णधार गुरु – श्री एकनाथी भागवत १८
१३) स्वास्थ्य के लिए हानिकर : रात्रि-जागरण १९
१४) चल पड़ो, बढ़े चलो... २०
१४) और भी व्यापक स्तर पर मनाया जा रहा है मातृ-पितृ पूजन दिवस २१
१५) 'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' ने झूठी चार्जशीट की होली जलायी २१
१६) खानपान का ध्यान विशेष - वसंत ऋतु का है संदेश २२
१७) गर्मियों में वरदानस्वरूप : हरड़ रसायन योग २३
१८) होली की बौछार, लाये जीवन में बहार २४
१८) बाधाएँ कब रोक सकी है.... २६

ॐ आनंद... ॐ आनंद... शुभ समाचार...

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र की अब वार्षिक एवं द्विवार्षिक सदस्यता का शुभारम्भ हो रहा है।

वार्षिक : रु.30 द्विवार्षिक : रु.50
पंचवार्षिक : रु.110 आजीवन : रु.300

संपर्क : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-5
फोन : (079) 39877739, 27505010-11

आत्मशिव को कैसे पायें ?

- पूज्य बापूजी

(महाशिवरात्रि : २७ फरवरी)

भगवान कहते हैं :

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।

जो मनुष्यों में अधम हैं वे मुझ आत्मशिव को, आत्मकृष्ण को नहीं भजते हैं क्योंकि माया ने उनका ज्ञान हर लिया है । यह पाऊँ, यह पाऊँ... पहले जो था नहीं, वह मिलेगा तो भी छूट जायेगा । पहले जो था, अभी है, बाद में रहेगा उसको तो सहज में पा सकते हैं । लेकिन जो सहज में पा सकते हैं और जिसे खोने का भय नहीं, उधर को जो नहीं जाते, उनकी बुद्धि मारी गयी है । और वे धनभागी हैं जिनकी बुद्धि में भगवान और सत्संग का महत्त्व है । वे भगवान का रस, ज्ञान, आनंद पाते हैं और भगवान शाश्वत हैं तो उस शाश्वतता में एकाकार हो जाते हैं; कुछ बनना नहीं है, जो है उसको जान लेते हैं ।

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ।

(गीता : ७.१५)

'मा...या', जो हो नहीं और सच्ची दिखे । बचपन सच्चा लगता था, रहा नहीं । सुख सच्चा लगता था, चला गया । दुःख सच्चा लगता था, चला गया लेकिन उसको जाननेवाला सत्यस्वरूप अभी भी है, मरने के बाद भी रहता है । हम उस शिवस्वरूप की उपासना करते हैं । ॐ... ॐ... ॐ...

वे ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हैं । कृष्णरूप, रामरूप, गुरुरूप... एक ही परमेश्वर अनेक रूपों में भासता है । जैसे एक ही समुद्र अनेक किनारों से, अनेक तरंगों से, अनेक तटों से, अनेक राज्यों, राष्ट्रों से अनेक प्रकार का भासता है, ऐसे ही वह एक ही परब्रह्म परमात्मा अनेकरूप में विराजमान है । हम

उसको आत्मरूप से, सर्वेश्वररूप से स्नेह करते हैं। ॐ... ॐ... ॐ...

शिवजी ने पार्वतीजी से कहा : ''मेरे दो रूपों की ऋषियों ने पूजा के लिए व्यवस्था की है। एक तो मेरे सर्प, जटा, बाघम्बरवाले रूप की **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र से पूजा-अर्चना करने से उनका भाव शुद्ध होते-होते वे मुझ आत्मा में पहुँचते हैं। दूसरा है शिवलिंग। ॐकार के जप से शिवलिंग की पूजा होती है, निराकार रूप की। और मेरा तात्त्विक रूप तो सत्संग से सुनेगा तो पता चलेगा कि मैं कितना सहज हूँ, कितना स्वाभाविक हूँ।''

जैसे ॐकार का 'अ' और ॐकार का आखिरी 'म', ॐकार का उच्चारण दीर्घ करेंगे तो 'अ' और 'म' के बीच मन इधर-उधर नहीं जायेगा, आत्मशिव में स्थिति हो जाती है। यह आत्मस्थिति की तरफ जाने का बहुत सुंदर मार्ग है। इस प्रकार सभी साधक रोज १५, २०, २५ मिनट अभ्यास करो... तो आप नरक से तो बचे हुए हो, दीक्षा ली है लेकिन स्वर्ग और पितृलोक में भी झख मारने की आपकी रुचि नहीं होगी। शिवजी जिसमें सुखी हैं, संतुष्ट हैं, परितृप्त हैं, उसीमें आप हो जाओगे। इसको बोलते हैं आत्मलाभ ! आत्मलाभ से बढ़कर कोई लाभ नहीं है, आत्मज्ञान से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है, आत्मसुख से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

ॐकार का लम्बा उच्चारण क्यों करना पड़ता है ? क्योंकि देखना, सूँघना - ये आदतें पड़ी हैं न, इसलिए साधना करनी पड़ती है। शिवजी को इतना लम्बा उच्चारण करना नहीं पड़ता। मेरे को आशाराम बापू से मिलने के लिए क्या करना पड़ेगा ? हम ही हैं ! ऐसे ही आत्मा होने के लिए क्या करना पड़ेगा, आनंदस्वरूप होने के लिए क्या होना ? हैं ही ! आँख बंद भी करने की जरूरत नहीं पड़ती। फिर ध्यान, कर्म, कर्तव्य नहीं है, मौज है ! लोगों का उद्धार करना यह कर्तव्य नहीं है, महापुरुष का स्वनिर्मित विनोद है। तो स्वनिर्मित विनोद में जगत का जितना सच्चा भला होता है, उतना सुधारकों के द्वारा नहीं होता। सोने का हिरण्यपुर बना लिया, बड़ा सुधार हो गया लेकिन फिर मरे और जन्मे ! सच्चा सुधार तो उन्हीं पुरुषों के द्वारा होता है जो अपने सत्स्वभाव, चेतनस्वभाव, आनंदस्वभाव, शिवस्वभाव में एकाकार हुए हैं।

महाशिवरात्रि को किये गये जप, तप और व्रत हजारों गुना पुण्य देते हैं। शिवरात्रि को भक्तिभाव से रात्रि-जागरण किया जाता है। जल, पंचामृत, फल-फूल एवं बिल्वपत्र से शिवजी का पूजन करते हैं। शिवरात्रि को घी का दीया जलाकर बीजमंत्र **'बं'** का सवा लाख जप करना बहुत हितकारी है। शुद्ध, सात्त्विक भावनाओं को सफल करने में बड़ा सहयोग देगा यह मंत्र। हो सके तो एकांत में शिवजी का विधिवत् पूजन करें या मानसिक पूजन करें। सवा लाख बार **'बं'** मंत्र का उच्चारण भिन्न-भिन्न सफलताएँ प्राप्त करने में मदद करेगा। जोड़ों का दर्द, वमन, कफ, पेट के रोग, मधुमेह (डायबिटीज) आदि बीमारियों में यह लाभ पहुँचाता है। यह बीजमंत्र स्थूल शरीर को तो फायदा पहुँचाता ही है, साथ ही सूक्ष्म और कारण शरीर में भी अपनी दैवी विशेषता जागृत करता है।

शिवरात्रि का फायदा लेना उपवास करके। शिवरात्रि की एक रात पहले संकल्प करना कि 'कल मैं जप करूँगा, शांत होऊँगा।' बाह्य सुख की वासना मिटाते-मिटाते अंदर की शांति, माधुर्य, सुख, जो सारों-का-सार है, उसमें विश्रांति पाने का पक्का इरादा करना। ॐ... ॐ... ॐ...

अमृत बिंदु

*** एक गुण दूसरे गुण को ले आता है ऐसे ही एक अवगुण दूसरे अवगुण को ले आता है, अतः सजग रहें।**

*** जिसके जीवन में समय का मूल्य नहीं, कोई ऊँचा लक्ष्य नहीं वह बिना पतवार की नाव जैसा होता है। साधक एक-एक श्वास की कीमत समझता है।**

– पूज्य बापूजी

तूफान का रुख मोड़ दें, ऐसे वीर हैं हम...

भारत जब अंग्रेजों के अधीन था तो सत्ता के मद में अंग्रेज भारतियों से बड़ा ही घृणित व्यवहार करते थे, भारतवासियों को बहुत ही नीची दृष्टि से देखते थे।

गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के कुछ छात्र अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने हेतु धर्मशाला (हि.प्र.) नामक नगर में गये हुए थे। वहाँ पर गोरे फौजियों की छावनी थी। एक दिन प्रातः जब छात्र घूमने जा रहे थे तो सामने से कुछ फौजी आते हुए दिखायी दिये। समीप आने पर छात्रों ने सड़क के एक ओर होकर उन्हें रास्ता दे दिया लेकिन एक सिपाही वह रास्ता छोड़कर एक छात्र की ओर मुड़ा और धीरे-धीरे घोड़ा इतने समीप ले आया कि उसका उस छात्र के शरीर से स्पर्श होने लगा।

गोरे सिपाही ने सोचा था कि यह छात्र या तो झुककर सलाम करेगा या फिर डर के भागेगा पर दोनों ही बातें नहीं हुईं। इसके विपरीत छात्र वहीं दृढ़ता से खड़ा रहा। तब सिपाही चिढ़कर बोला : ''सलाम कर !''

छात्र (निर्भीकता से) : ''क्यों करें सलाम ?''

सैनिक इस आत्माभिमान भरे उत्तर से उत्तेजित हो उठा और अंग्रेजी में बोला : ''तुम्हें चाहिए कि हर अंग्रेज को सलाम किया करो।''

वह छात्र अपने स्थान पर निर्भीक व अचल खड़ा रहा और उसी स्थिर मुद्रा में उसने फिर कहा : ''ऐसा कोई कानून नहीं है जो हमें जबरदस्ती सलाम करने को बाध्य करे।''

उस बालक की दृढ़ता, निर्भीकता को देखकर गोरे सिपाही के हौसले पस्त हो गये। अब उसके पास दो ही विकल्प थे - या तो वह उस निर्भीक छात्र पर अपना घोड़ा चढ़ा दे या फिर अपनी हार मानकर वापस चला जाय। मन-ही-मन वह क्रोध से जला जा रहा था। किंतु छात्र के अदम्य साहस, निर्भीक मुखाकृति तथा दृढ़ संकल्पशक्ति के सामने उसे लौटने का ही निश्चय करना पड़ा और यह कहते हुए कि ''तुम सलाम नहीं करटा ? अच्छा, देखा जायेगा।'' और वह चला गया।

वही छात्र आगे चलकर एक बड़ा साहित्यकार तथा ईमानदार सफल पत्रकार आचार्य इन्द्र विद्यावाचस्पति के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जिसके जीवन में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की बुलंदी है, वह भले प्रारम्भ में कष्ट का सामना करता दिखायी दे पर अंत में जीत तो उस अदम्य आत्मविश्वास से भरे वीर की ही होती है। न्याय का साथ देनेवाले और अन्याय से मरते दम तक लोहा लेनेवाले ऐसे वीर ही खुद की तथा परिवार, समाज व देश की सच्ची सेवा करने में सफल हो पाते हैं।

विशाल संत-सम्मेलन, जोधपुर

श्री नागेन्द्र ब्रह्मचारीजी, छिंदवाड़ा : आज सभी संतों के मन में एक वेदना है कि जो संत समाज को धर्म की, नीति की शिक्षा देते हैं, उनके विरुद्ध कैसा षड्यंत्र चल रहा है ! विधर्मियों द्वारा चलायी गयी धर्मांतरण की, लव जिहाद की - इन सारी गतिविधियों को देखते हुए भी शासन-प्रशासन के द्वारा उनके विरुद्ध किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है, जबकि हमारे संतों के ऊपर झूठे लांछन लगाये जा रहे हैं !

हम शासन और प्रशासन से यह माँग करते हैं कि जिन लोगों ने संतों की चैनलों के माध्यम से या बयानबाजी से मानहानि की है, बापूजी तो निश्चित रूप से बाइज्जत बरी होकर आयेंगे पर ऐसे लोगों के विरुद्ध आपराधिक मामला दर्ज किया जाय।

श्री प्रशांतानंदजी महाराज, ऋषिकेश : बापू आशारामजी जब अपने साधनाकाल में साधना करते थे तो अकेले थे, विरक्त थे लेकिन अपने सद्गुरु की आज्ञा पाकर वे जगत-कल्याण के लिए उतरे। जब वे इस कार्य के लिए उतरे तो कारवाँ बढ़ता गया, उनके साथ ५-६ करोड़ लोग जुड़ गये। उनको दिशा दी, ज्ञान दिया, सत्य का पथ दिया। उनके द्वारा भारत का ही नहीं, विश्व का निर्माण हो रहा है। विश्व-निर्माण करनेवाले उन महापुरुष को आज हम कारागार में बंद नहीं देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बापू जल्दी-से-जल्दी बाहर आ जायें।

सेनाचार्य स्वामी श्री नरेशानंदजी, शुक्रताल : जो नियम बापूजी की हाजिरी में साधक करते थे, वही नियम और बढ़ाकर करिये, कम नहीं करना है। आज हमारी परीक्षा की घड़ी है। सभी संतों के संकल्प और साधकों की भक्ति के बल से बापूजी बहुत जल्दी बाहर आयेंगे।

बापूजी के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना है

- श्री रमेश शिंदे, राष्ट्रीय प्रवक्ता हिन्दू जनजागृति समिति

जैसे भगतसिंह को जिस जेल में रखा था, वहाँ जा के या अंडमान में जाकर सावरकरजी को वंदन किया जाता है, वैसे कल लोग पूछेंगे कि बापूजी को कहाँ रखा था ? वहाँ पर वंदन करने के लिए जायेंगे (आज भी जा रहे हैं)। बापूजी जोधपुर जेल में हैं तो वहाँ पर जेल के अंदर मानो नया आश्रम खुल गया है। वह आज का नया तीर्थ होगा।

बापूजी ने सबको यह विश्वास दिलाया था कि हमें इस वेलेंटाइन डे को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' में बदलना है। इसलिए हमें बापूजी के इस संकल्प को जन-जन तक लेकर जाना होगा।

तो षड्यंत्रकारियों का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा

- श्री फूलकुमार शास्त्री, शिव-कथावाचक, जम्मू

आज संतों को मिटाने का षड्यंत्र चल रहा है। संत आशारामजी बापू पूरे विश्व को जो ज्ञान प्रदान कर रहे हैं, इसको यदि हम सत्यप्रतिज्ञ होकर विश्वास से हृदय में उतारें तो ये षड्यंत्रकारी बादलों की तरह छिन्न-भिन्न हो जायेंगे और इनका कोई अस्तित्व नहीं रहेगा।

बापूजी गुरु ही नहीं हैं, साक्षात् अवतारी महापुरुष हैं, जिन्होंने इतनी विशाल जनता को भगवान के प्रेम में, भजन में लगा दिया और अपनी संस्कृति से प्रेम करना सिखा रहे हैं। विश्व में ऐसे गुरु इस समय में मिलना बहुत ही कठिन है। बार-बार हम सरकार से अपील करते हैं कि वह ऐसे संतों पर अत्याचार करना बंद करे। जैसे पूरे विश्व में भगवान की जय-जयकार होती है, ऐसे सम्पूर्ण विश्व में आशाराम बापूजी की जय-जयकार हो रही है और होती रहेगी।

श्री चिदानंद मुनिजी, भुवनेश्वर (ओड़िशा) : बापूजी के भक्तों के हृदय में जो पीड़ा है, उसे कोई नहीं समझता; न सरकार समझती है, न प्रशासन ! संत-समाज बापूजी के साथ है। मगर सिर्फ सनातन धर्म के संतों के ऊपर ऐसे षड्यंत्र क्यों किये जा रहे हैं ? यह एक प्रश्न है। इस भारतभूमि पर, जिन संतों के वचन सारे विश्व को राह दिखा रहे हैं, उन संतों को सताया जा रहा है !

श्री मणिकांत शास्त्रीजी, अयोध्या : इस सनातन धर्म को विधर्मी कितना भी बदनाम करने का प्रयत्न करें पर यह बदनाम नहीं होगा। आप किसी भी ज्येष्ठ महात्मा के ऊपर कीचड़ फेंकते हो तो वह कीचड़ लौटकर आपके ही ऊपर पड़ता है।

श्री रामगोपाल शास्त्री, भागवत कथाकार, वृंदावन : बिकाऊ मीडियावाले और भ्रष्ट राजनीतिवाले हमारे आशारामजी बापू के पीछे पड़े हैं परंतु हमें पीछे नहीं हटना है। बापूजी की हिम्मत को देखो, उनके भक्तों को देखो। बापूजी हमारे भगवान हैं, हम उनके एक पार्षद, छोटे-से भक्त हैं। हमें धर्म को बचाना चाहिए।

श्री पंचमदासजी महाराज, जौनपुर : आज हमारे देश में संतों का बहुत अपमान हो रहा है। जो संत हमें सुधार रहे हैं, उनको जेल में रखा जा रहा है। यह हमारे देश की कैसी दशा है ! इसके लिए हम सभीको संघर्ष करना पड़ेगा। गुरु का कोई अपमान करता है तो गुरुजी ने इतनी क्षमता दी है कि अपनी वाणी से उसकी वाणी बंद कर दो।

इंदिराजी, सरकारी अध्यापक, पंजाब (१३ साल से मौन चल रहा है, पत्र में लिखकर दिया संदेश) : मेरे पास षड्यंत्रकारियों ने कुछ लोगों को भेजा और कहा था कि 'बापू पर आरोप लगाओ कि 'बापू ने मेरा सम्मोहन कर रखा है।' हम तुम्हें जो चाहो वह कीमत देंगे' लेकिन मैं तैयार नहीं हुई। मुझ पर कई तरह के दबाव भी बनाये जा रहे हैं। यह एक बड़ा षड्यंत्र है।

सत्य के पथिक बनकर खड़े हों

– योगगुरु स्वामी हर्षानंदजी

हर युग में सत्य की परीक्षा हुई है, वे चाहे राम हों, कृष्ण हों, जीसस हों, पैगम्बर हों, मीराबाई हों, महात्मा गांधी हों। तो कलियुग में प्रकृति ने परीक्षा के लिए किसे अवसर दिया ? इस कलियुग में प्रकृति ने बापू को अवसर दिया कि आप सत्य के पथिक बनकर खड़े हों। सुबह शीघ्र ही आयेगी।

महंत श्री घनश्यामानंदजी, अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, भारत जागृति मोर्चा : बापूजी ने देश को बहुत कुछ दिया है। बापूजी को जेल में बंद करना, बापूजी का अपमान करना इस युग की सबसे बड़ी त्रासदी है। इससे बड़ी दुर्घटना आज तक विश्व के इतिहास में नहीं हुई है। अगर कोई भूकम्प आता है, कोई बाढ़ आती है तो जान की हानि होती है, पैसे की हानि होती है लेकिन बापूजी को बंद करने से ज्ञान की हानि है, चरित्र की हानि है, ईमान की हानि है जो जान-माल से बड़ी हानि है।

विराट संत-सम्मेलन, अहमदाबाद

महामंडलेश्वर श्री सुनील शास्त्रीजी : बापू पर इल्जाम लगानेवालो ! आज भी बापूजी एक ही चीज कह रहे हैं, **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।'** यही कारण है कि तुम बददुआ से बचे हो। मीडिया ने क्या नहीं चलाया ! बदनाम करने हेतु कोई कसर नहीं छोड़ी। जिस देश का खाते हो, जिस देश में रहते हो, जिस देश में मरोगे उस देश के संविधान का अपमान तो मत करो।

संतों पर अत्याचारों की अगर बात आती है तो कश्मीर से देखिये। कश्मीर में दिनेश भारतीजी पर षड्यंत्र चलाया गया, इसलिए कि 'अमरनाथ की जमीन क्यों माँगी तूने ?' कश्मीर के नीचे हिमाचल में गोरानंदजी महाराज, उत्तर प्रदेश में नागाजी महाराज और मध्य प्रदेश में महर्षि महेश योगी, प्रज्ञा सिंहजी का केस। इसके बाद हरियाणा में चम्पक लालजी महाराज, राजस्थान और गुजरात में भी कई संतों पर षड्यंत्र चलाये गये। नीचे महाराष्ट्र में जाटू महाराज की तो हत्या ही करवा दी, फिर नरेन्द्र महाराजजी, उसके आगे जयेन्द्र सरस्वतीजी का केस। ओड़िशा में तो लक्ष्मणानंदजी की हत्या... क्या यह पूरे हिन्दुस्तान से हिन्दू संस्कृति और हिन्दू संतों को मिटाने का खुला षड्यंत्र नहीं है ?

२२ तारीख को मैं मिला बापूजी से, उन्होंने एक ही बात कही कि ''हमारे साधकों को कह दो शास्त्रीजी ! सावधान हो जायें।''

श्री महंत राजेन्द्रदासजी, अखिल भारतीय पंचनिर्मोही अनि अखाड़ा, अहमदाबाद : बापूजी पूरी दुनिया में अपनी संत-प्रवृत्ति से धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे थे, आज भी कर रहे हैं और आगे भी करेंगे।

श्री राजशेखर उपाध्याय, 'रामायण' धारावाहिक के जाम्बवंत : जब-जब इस संसार में उथल-पुथल होता है, तब-तब संत ही मार्गदर्शक बनते हैं। संत और गुरु ही हमें सही रास्ता दिखाते हैं, दूसरों के दुःख में पिघल जाते हैं और हमारे गुरुदेवजी उनमें सर्वोपरि हैं। कहाँ नहीं बरसी है उनकी सत्संग-वर्षा ? जन-जन में, गाँव-गाँव में, देश में और विदेशों में भी। आपमें अपार बल है। जागिये ! बहुत साहस है आप लोगों में। आपकी प्रार्थना भगवान निश्चित रूप से सुनेंगे।

स्वामी रामानंदजी महाराज, बिश्नोई सम्प्रदाय : बापूजी ने भारत के अंदर एक नयी चेतना, नयी जागृति, मानव-समाज को नया आयाम दिया है।

श्री बी. एम. गुप्ता, वरिष्ठ अधिवक्ता : सन् २००८ से गुजरात में बापूजी और उनके आश्रम के खिलाफ गलत केसों का निर्माण हो रहा है लेकिन देखिये, ५ साल पूरे होने के बाद भी चाहे जितने गलत इल्जामों को जन्म दिया गया फिर भी जनता का विश्वास कितना अडिग है ! और यह विश्वास यह बता रहा है कि हमारे बापूजी एवं श्री नारायण साँईं निर्दोष हैं, उन्हें फँसाया गया है।

मेरी सभी साधकों से हाथ जोड़कर एक विनती है कि भक्ति में शक्ति है और भक्ति विश्वास से होती है। आपका विश्वास बापूजी में अडिग है, आप बापूजी की भक्ति करते हैं तो शक्ति आपको अवश्य मिलेगी और आपकी प्रार्थना ऊपरवाला भी स्वीकार करेगा और बापूजी शीघ्र बाहर आयेंगे।

संत-सम्मेलन, राजनांदगाँव (छ.ग.)

श्री आनंदजी महाराज, मठ-मंदिर प्रांत प्रमुख (छ.ग.) : बापूजी ने जो किया, जितनी साधनाएँ कीं, वह पूरा विश्व जान रहा है। मैं उनको नमन करता हूँ और सभी धर्मप्रेमियों से कहता हूँ कि हमारे हिन्दुत्व में बड़ी शक्ति है। जो हमारे संतों का, हमारे भगवान का अनादर कर रहा है क्या वह टिक सकता है ! कदापि नहीं टिकेगा।

श्री पुरुषोत्तमजी महाराज, मानस मर्मज्ञ : जब-जब हमने अपने विश्वगुरु पद को हासिल करने के लिए कदम आगे बढ़ाया है, तब-तब इसी तरह की स्थिति निर्मित हुई है। जब विधर्मियों ने देखा कि भारत केन्द्र में आ रहा है और धर्मांतरण की दुकानदारी पूरी तरीके से नेस्तनाबूद हो जायेगी, तब बाकी कुछ करते नहीं बना तो बापूजी व अन्य संतों, जिन्होंने धर्मांतरण के विरोध में अपने-आपको झोंक दिया है, उनके ऊपर लांछन लगाते जा रहे हैं।

बापूजी ने मातृ-पितृ पूजन दिवस द्वारा सांस्कृतिक धरोहर को बचाया है

– जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा

हमारे भारतवर्ष में जो पश्चिमी सभ्यता बहुत ज्यादा हावी हो रही थी, उसे रोकने का प्रयास आशारामजी बापू ने किया। पश्चिमी सभ्यता हमारी नौजवान पीढ़ी को वेलेंटाइन डे का गलत रास्ता दिखा रही थी, उनको सही मार्ग दिखाते हुए आशारामजी बापू ने माता–पिता के पूजन का जो रास्ता निकाला, इससे उन्होंने हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर को बचाया है और इस अभियान को पूरे विश्व में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हो रही है।

आज देश के अंदर ऐसी संस्थाओं की, ऐसे गुरुओं की, ऐसे धर्माचार्यों की बहुत जरूरत है जिनके धर्म–प्रचार से प्रेरित होकर बच्चे अपनी संस्कृति अपनायें। क्योंकि देश की जो संस्कृति है, वह आहिस्ता–आहिस्ता अलोप होती जा रही है, जिसे बचाने की बहुत जरूरत है। जो लोग इसे बचाने में लगते हैं, उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे पिछले ८ वर्षों से आशारामजी बापू ने भारत में फैलती जा रही पश्चिमी सभ्यता की इस कुप्रथा को रोकने का प्रयास शुरू किया और उसमें सफलता भी हासिल की। लेकिन पश्चिमी सभ्यता का प्रचार–प्रसार और धर्म–परिवर्तन करनेवाले लोगों को यह बात हजम नहीं हुई। नतीजन आज पूरा संसार जान रहा है कि बापूजी को कितनी पीड़ा इन कार्यों के लिए अपने शरीर पर लेनी पड़ रही है। फिर भी बहुत खुशी की बात है कि बापूजी के हौसले बुलंद हैं। हर पीड़ा का सामना करते हुए उनके शिष्य आज भी उस कार्य को कर रहे हैं। बापूजी के जेल में होने के बावजूद, हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पूरे संसार में माता–पिता के पूजन का संदेश जा रहा है, यह बहुत अच्छी बात है।

माता-पिता की आराधना-पूजा से बहुत अच्छी सफलता मिलती है

– फिरोज खान, 'महाभारत' धारावाहिक के अर्जुन

यह बहुत अच्छी बात है कि मातृ–पितृ पूजन की मुहिम शुरू की गयी। हमारी सभ्यता और संस्कृति – हिन्दुस्तान की संस्कृति है, जहाँ हम माँ–बाप को देवता मानते हैं। 'वेलेंटाइन डे' अंग्रेजों ने शुरू किया है तो यह जरूरी नहीं है कि हम भी उसे मनायें। अगर उन लोगों ने वह दिन शुरू किया है तो हम लोग उस दिन 'मातृ–पितृ पूजन दिवस' मनायें, माता–पिता की आराधना करें, पूजा करें तो बहुत अच्छी सफलता मिलेगी।

१४ फरवरी को अम्मा अब्बाजान का पूजन करें

- भुट्टो खान

मेरा सभीसे अनुरोध है कि बापूजी के संदेश का अनुसरण करके १४ फरवरी को अपने अम्मा-अब्बाजान का पूजन करके 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें।

आज कैसा अनर्गल प्रचार किया जा रहा है ! यह सीधा-सीधा आक्रमण है हमारे संस्कारों पर। संत हमको संस्कार देते हैं और संस्कारों से संस्कृति की रक्षा होती है। अगर हमारे संत नहीं होंगे तो हमको संस्कार देनेवाला कौन होगा ? और जब हमारे पास संस्कार नहीं होंगे तो हमारी संस्कृति को षड्यंत्रकारी आराम से दबा सकते हैं।

बापूजी के पूरे परिवार को ही प्रताड़ित करने के लिए यह षड्यंत्र रचा गया है। लेकिन उन षड्यंत्रकारियों की बुद्धि बहुत छोटी है क्योंकि वे यह समझते हैं कि बापूजी के परिवार में केवल दो-पाँच ही सदस्य हैं लेकिन आज करोड़ों-करोड़ों लोगों का बापूजी का परिवार है।

मातृ-पितृ पूजन दिवस विश्वव्यापी होगा ।

-पूज्य बापूजी

हमारी भाषा हमारी पहचान है

एक युवक ने इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था । इतिहास उसका प्रिय विषय था । एक बार वह युवक पाठ्यक्रम में निर्धारित अंग्रेज लेखक की लिखी इतिहास की पुस्तक पढ़ रहा था । जिसमें शिवाजी महाराज को एक लुटेरा सरदार कहा गया था । यह पढ़कर भारतीय सनातन धर्म को ही अपनी आन-बान-शान माननेवाले उस सच्चे देशप्रेमी का खून खौल उठा। और उस बुद्धिमान, साहसी युवक ने उस कथन को चुनौती दी । पुस्तकालयों में जाकर खोज-खोजकर छत्रपति शिवाजी महाराज की महानता, वीरता, सच्चरित्रता, देशप्रेम और सर्वसुहृदता के तथ्य इकट्ठे कर सबके सामने रखे।

डॉ.राममनोहर लोहियाजी

अंततः अंग्रेजों को उस युवक की दृढ़ता के आगे घुटने टेकने पड़े और लोगों की आस्था, विश्वास को ठेस पहुँचानेवाला वह वाक्य पुस्तक से हटाना पड़ा। वे युवक थे राममनोहर लोहियाजी।

उसके बाद लोहियाजी को अंग्रेजी भाषा से इतनी घृणा हो गयी कि उन्होंने किसी भी ब्रिटिश संस्था में प्रवेश लेने से इनकार कर दिया। इंग्लैंड ने भारत को अपना उपनिवेश बना रखा था इसलिए उन्होंने अपने अध्ययन के लिए बर्लिन (जर्मनी) विश्वविद्यालय को चुना।

'हमारा देश, हमारी भाषा' यह मंत्र डॉ. लोहियाजी ने दिया था। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय भाषा या एक संयोजक के रूप में समर्थन किया। वे कहते थे : ''हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते कि जब हिन्दी विकसित होगी तो उसे राष्ट्रभाषा बनायेंगे । उसे हमारी राष्ट्रभाषा बनने दो । लगातार उपयोग में आने से वह स्वयं ही राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित हो जायेगी।''

लोहियाजी को हिन्दी भाषा से इतना प्रेम था कि वे निष्णात तो थे जर्मन और अंग्रेजी भाषा में किंतु अपने सारे निजी कार्य और बातचीत, यहाँ तक कि लोकसभा में भी वे हिन्दी का ही प्रयोग करते थे।

सन् १९६५ में लोहियाजी ने 'अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन शुरू कर दिया । उन्होंने 'हिन्दी यहाँ और अब' नामक एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने अपना अनुभव और अंग्रेजी भाषा की सच्चाई के बारे में लिखा : **''अंग्रेजी का प्रयोग मौलिक चिंतन में बाधा है और हीनभावना उत्पन्न करता है। पढ़े–**

लिखों और अनपढ़ जनता के बीच खाई उत्पन्न करता है । आओ, हम सब एक होकर हिन्दी को उसके मूल कीर्ति-शिखर तक पहुँचायें ।''

लोहियाजी भारत सरकार की अमीरों के लिए विशिष्ट प्रकार से चलायी जानेवाली दोहरी शिक्षा-नीति के विरुद्ध थे । उनका कहना था कि इस तरह एक नये प्रकार का वर्गभेद उत्पन्न होगा ।

आज भारत में अंग्रेजी भाषा को जो इतना महत्त्व और सम्मान दिया जा रहा है और हिन्दीभाषी व्यक्ति को अनपढ़-गँवार की संज्ञा देकर ठुकराया जा रहा है, इससे वर्षों पहले लोहियाजी का वर्गभेद का लगाया गया अनुमान सच होते दिख रहा है । वर्तमान में जो बच्चे अंग्रेजी विद्यालयों में पढ़ते हैं, वे खुद को उच्च वर्ग का मानते हैं, अहंकारी बनते हैं और तदनुसार व्यवहार भी करते हैं ।

आज यदि हम अपने स्वाभिमान, संस्कृति और गौरव की सुरक्षा करना चाहते हैं तो हम सबको एकजुट होकर लोहियाजी के 'अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन को फिर से शुरू करना होगा और **'हमारा देश, हमारी भाषा'** का मंत्र जन-जन तक पहुँचाना होगा, तभी हम अपनी भाषा, अपनी पहचान को बचाने में सफल हो पायेंगे ।

अन्यायपूर्वक तोड़ा गया जबलपुर आश्रम का निर्माणकार्य

संत श्री आशारामजी आश्रम, जबलपुर का निर्माणकार्य आश्रम की खुद की खरीदी हुई जमीन पर किया गया था और १० वर्षों से भी ज्यादा पुराना था । यह क्षेत्र जबलपुर मास्टर प्लान में आवासीय क्षेत्र घोषित किया गया है । ऐसे क्षेत्रों में यदि कोई पूर्व अनुमति बिना का निर्माणकार्य पाया जाता है तो कंपाउंडिंग शुल्क (शमन शुल्क) लेकर उसे नियमित किया जा सकता है । आश्रम-प्रबंधन कंपाउंडिंग के लिए तैयार भी था । इस संबंध में माननीय उच्च न्यायालय में आश्रम-प्रबंधन की अपील पेंडिंग थी, उसकी सुनवाई उसी दिन होनी थी । लेकिन प्रशासन द्वारा उस निर्णय की जरा भी प्रतीक्षा न करते हुए निर्माणकार्य सीधा तोड़ने में जल्दबाजी दिखायी गयी । यह सरासर अन्याय है, कानून की अवहेलना है ।

जानकारी के अनुसार उस क्षेत्र के अधिकांश निर्माणकार्य बिना पूर्व मंजूरी के किये गये हैं । तो जितनी तत्परता से सत्प्रवृत्तियों में लगे हुए आश्रम के निर्माणकार्य को तोड़ा गया, उतनी ही तत्परता से प्रशासन अन्य निर्माणों को तोड़ने के लिए कदम क्यों नहीं उठाती ? दूसरी बात, एक तरफ जब यह मामला माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन है तो न्यायालय का निर्णय आने के पहले ही जनहित में कार्यरत एक आश्रम, जिसका लाभ आसपास की जनता ले रही थी, का निर्माणकार्य तोड़कर प्रशासन ने जनता का कौन-सा हित किया है ? और निर्माणकार्य टूट जाने के बाद उच्च न्यायालय की कार्यवाही का औचित्य ही क्या रहा ?

आश्रम ट्रस्ट एक पंजीकृत धर्मार्थ ट्रस्ट है तथा यह पूर्त आयुक्त (चैरिटी कमिश्नर)/जिलाधिकारी के अधीन होता है । फिर ऐसी धार्मिक संस्था का निर्माणकार्य यदि प्रशासन नियमानुसार नियमित करता तो राजकीय कोश में आय बढ़ती परंतु द्वेषवत् इसे तोड़कर प्रशासन ने तो खुद की राजकीय सम्पत्ति एवं आमदनी का भी नुकसान किया । यह जनहित में कतई नहीं है ।

सियासी शतरंज पर आशारामजी बापू

- हरिश्चन्द्र मिश्र
सम्पादक, 'दोषमुक्ता' पत्रिका

इतिहास साक्षी है कि जब-जब साधु-संतों को सताया गया, तब-तब सत्ताधारियों का विनाश हुआ है। हिरण्यकशिपु, रावण और कंस तो इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं। वह भी उस काल और युग में जब धर्म अपने चरम पर था। फिर अभी तो कलियुग है... घोर कलियुग ! इस युग में जो धर्म की बात करेगा, जो धर्महित की बात करेगा, जो धर्मांतरण को रोकने हेतु प्रयासरत रहेगा, जो समाज में सत्य सनातन धर्म के विस्तार के लिए जाना जायेगा उसे तो विधर्मियों का निशाना बनना ही पड़ेगा। कुछ ऐसी ही घटनाएँ हमारे देश में हाल के दिनों में घटित हुई हैं । पहले शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती को हत्या के मामले में फँसाया गया, फिर साध्वी प्रज्ञा और स्वामी असीमानंद को आतंकवादी बताकर जेल में ठूँसा गया, फिर स्वामी नित्यानंद को सेक्स स्कैंडल में लिप्त बताया गया । पर नतीजा क्या निकला ? साध्वी प्रज्ञा और असीमानंद के आरोप अभी तक सिद्ध नहीं हो पाये । शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती हत्या के मामले में निर्दोष करार दिये गये । स्वामी नित्यानंद के खिलाफ जारी अश्लील सीडी फर्जी साबित हुई और इसके लिए दो न्यूज चैनलों को बाजाब्ता माफी माँगनी पड़ी।

और अब उन्हीं विधर्मियों की गाज आशारामजी बापू पर गिरी है क्योंकि आशारामजी बापू हिन्दुओं के धर्मांतरण का विरोध कर रहे थे । निःसंदेह आशारामजी बापू का यह कार्य धर्म के प्रति उनकी आस्था का द्योतक था लेकिन हमारे कथित धर्म-निरपेक्ष देश के कुछ सियासी दलों को इसमें वर्ष २०१४ में होनेवाले लोकसभा चुनाव में अपने लिए खतरे की बू महसूस होने लगी। फिर क्या था, शुरू हो गयी बापू के खिलाफ लामबंदी । एक के बाद एक आरोप, जिनमें उनके पूरे परिवार को घसीट लिया गया। बापू आशारामजी पर जो आरोप लगाये गये हैं वे और कुछ नहीं,वर्ष २०१४ का चुनावी स्टंट है, ताकि भारत के लोगों के मन में साधु-संतों के प्रति घृणा फैल जाय और हिन्दू व हिन्दुत्व की बात करनेवाले दलों को लोकसभा चुनाव में मुँह की खानी पड़ जाय। राजनीति के शतरंज पर कुछ ऐसी बिसातें बिछायी गयी हैं जिन पर चाल दिल्ली से चली जा रही है लेकिन यह भी सत्य है कि जैसे सोना जितना आग में तपता है उतना ही कुंदन बनकर निखरता है, उसी तरह बापूजी भी आरोपों से मुक्त होकर हमारे बीच आयेंगे और फिर से अपने ओजस्वी-तेजस्वी, मर्मस्पर्शी वचनों से सभीको ईश्वरीय आनंद और ज्ञान से सराबोर करेंगे। क्योंकि सत्य परेशान तो हो सकता है मगर पराजित कभी नहीं होता।

एक अप्रतिम पुस्तक है दिव्य प्रेरणा-प्रकाश

- डॉ. अक्षय मिश्रा,
एम.डी. (आयुर्वेद), डी.वाई.ए.

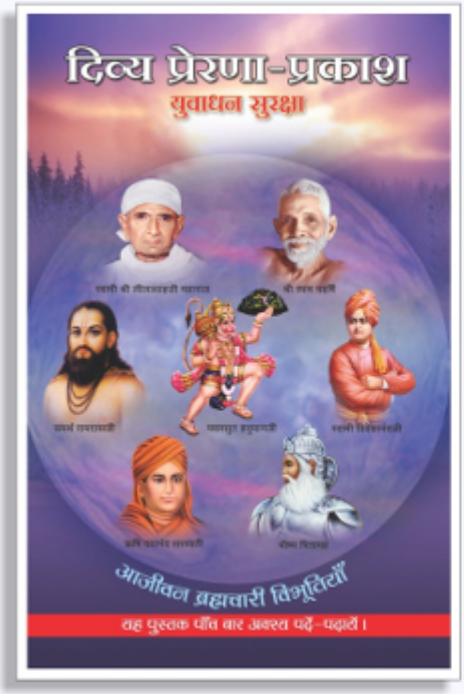

सद्गुरु के बिना जीवन निरर्थक है। गुरु बिना आप ऐसा समझिये कि बिना पायलट के हवाई जहाज। बिना गुरु के मनुष्य दिशाहीन रहता है। उसके चरित्र से लेकर उसके रहने, खान-पान, बुद्धि-स्मृति सब चीजों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। आज के युग में युवा पीढ़ी जो पाश्चात्य कल्चर की तरफ आकर्षित हो रही है और अपने वीर्य का, ओज का, शरीर का, अपने मन-बुद्धि का नाश करती जा रही है, उसके लिए एक अप्रतिम पुस्तक है 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश'। इसे हर युवक को, हर व्यक्ति को कम-से-कम ५ बार पढ़ना बहुत आवश्यक है। पूज्य बापूजी ने अगर इस पुस्तक के बारे में नहीं बताया होता और मैंने पुस्तक नहीं पढ़ी होती तो मेरा जीवन शायद एक पशु की तरह ही होता। इसी पुस्तक की वजह से मुझे वीर्य रक्षण व ब्रह्मचर्य का महत्त्व समझ में आया। आज का इतना पतनकारी वातावरण है फिर भी बापूजी की कृपा और 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक की वजह से मैं उत्थान की तरफ बढ़ रहा हूँ।

पुण्यदायी तिथियाँ

४ मार्च : अंगारकी-मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से ५ मार्च प्रातः ४-५० तक)

१२ मार्च : आमलकी एकादशी (आँवले के वृक्ष के पास रात्रि-जागरण, उसकी १०८ या २८ परिक्रमा से १००० गौदान का फल)

१४ मार्च : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-४८ से सूर्यास्त तक)

१६ मार्च : व्रत पूर्णिमा, होलिका दहन

२३ मार्च : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि ८-१३ तक)

२७ मार्च : पापमोचनी एकादशी (यह व्रत करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके माहात्म्य को पढ़ने-सुनने से सहस्र गौदान का फल मिलता है।)

२७ मार्च : ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज प्राकट्य दिवस

२८ मार्च : वारुणी योग (सुबह ७-५३ से सूर्यास्त तक)
(इस दिन गंगा आदि तीर्थ में स्नान, दान, उपवास १०० सूर्यग्रहण के समान फलदायी है। जो तीर्थक्षेत्र में नहीं रहते हैं वे पानी में निहारकर तीर्थों का नामोच्चारण एवं स्मरण करके स्नान करें।)

३१ मार्च : राष्ट्रीय चैत्री नूतन वर्ष वि.सं. २०७१ प्रारम्भ, गुडी पड़वा (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक)

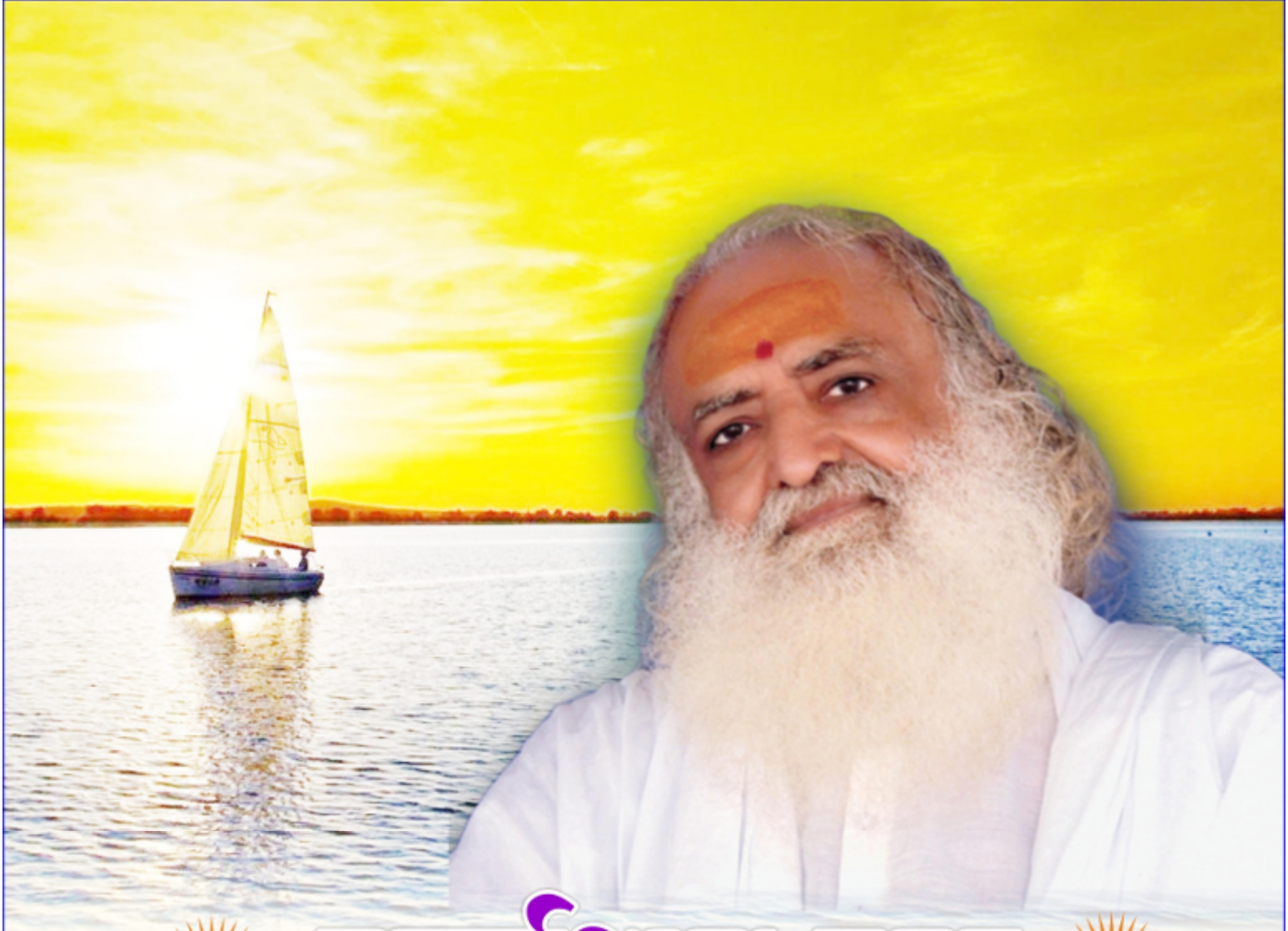

कर्णधार गुरु

(संत एकनाथ षष्ठी : २२ मार्च)

भगवान श्रीकृष्ण अपने प्यारे भक्त उद्धव को भवसागर के कर्णधार सद्गुरु की कुशलता का वर्णन करते हुए कहते हैं :

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं
प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम्।
मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्
भवाब्धिं न तरेत् स आत्महा॥

'यह मनुष्य शरीर समस्त शुभ फलों की प्राप्ति का मूल है और अत्यंत दुर्लभ होने पर भी अनायास सुलभ हो गया है। इस संसार-सागर से पार जाने के लिए यह एक सुदृढ़ नौका है। शरण-ग्रहणमात्र से ही गुरुदेव इसके केवट बनकर पतवार का संचालन करने लगते हैं और स्मरणमात्र से ही मैं (अंतर्यामी) अनुकूल वायु के रूप में इसे लक्ष्य की ओर बढ़ाने लगता हूँ। इतनी सुविधा होने पर भी जो इस शरीर के द्वारा संसार-सागर से पार नहीं हो जाता, वह तो अपनी आत्मा का हनन (अधःपतन) कर रहा है।'

(श्रीमद् भागवत : ११.२०.१७)

चौरासी लाख योनियाँ हैं। इनमें मनुष्य देह के सिवा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का कोई अधिकारी नहीं है। इसकी प्राप्ति अत्यंत कठिन है। संसाररूपी भवसागर पार करने के लिए बड़े भाग्य से नरदेहरूपी जहाज मिलता है। सुलभ अर्थात् अविकल (ज्यों-का-त्यों, पूरा-का-पूरा) और सुकल्प अर्थात् विचारशील को भवपार ले जानेवाले नाविक केवल गुरु ही हैं और मैं 'श्रीहरि' अनुकूल बहनेवाली वायुन

हूँ। गुरु मंत्र देते हैं तथा महावाक्य का उपदेश करते हैं, इसीलिए भक्तों का उद्धार करने के कारण सभी दृष्टियों से गुरु **'कर्णधार'** हैं। कर्णधार गुरु की कुशलतना का वर्णन किन शब्दों में किया जाय ? भँवर, प्रपात, पानी की तेज धारा, विकल्प के कल्लोल व एक के बाद एक आनेवाला पानी का प्रवाह आदि से बचाकर वे नौका को तेजी से आगे बढ़ाते हैं। विवेक की पतवार लगाकर कर्माकर्म का जल-प्रवाह काट देते हैं और भजनरूपी मस्तूल (बड़ी नावों के बीच का वह लट्ठा जिसमें पाल बाँधते हैं) के बल पर नौका तेजी से बढ़ती जाती है। काम-क्रोध की बड़ी-बड़ी मछलियाँ चारे की खोज में छिपी रहती हैं, उस पर शांति का जाल डालकर वे अपना जहाज बड़ी कुशलता से आगे बढ़ाते हुए जहाज को सायुज्य गोदी (सायुज्य मुक्ति) में ठहरा देते हैं। जहाँ न शोरगुल है, न खटपट है। सर्वत्र निर्मलता-ही-निर्मलता है।

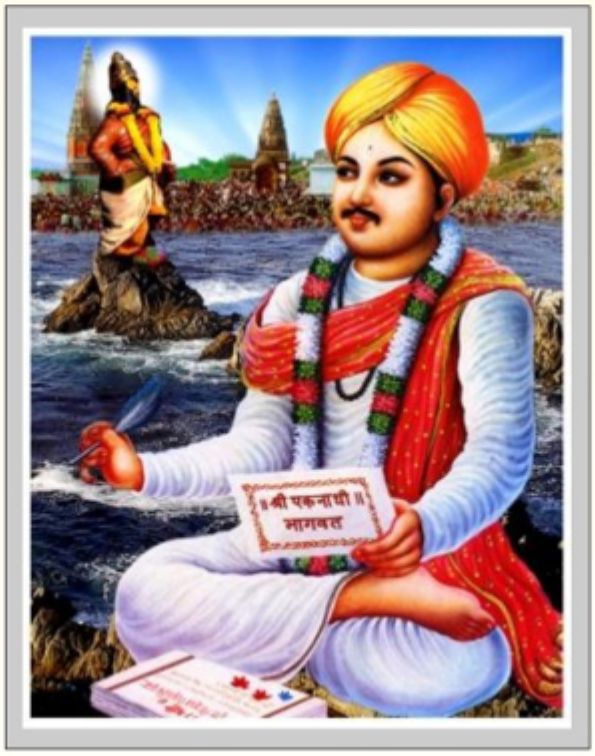

ऐसा यह नर-देह का दुर्लभ जहाज है तथा श्रीगुरुरूप से मैं ही उसका कर्णधार अर्थात् नाविक हूँ। यदि आगे जाकर नरक-यातना भोगने के लिए ही यह देह विषयों में खर्च की तो वह अपने ही सीने में शस्त्र घुसेड़ने जैसी बात होगी। ऐसा श्रेष्ठ नर-शरीर प्राप्त होने पर भी जो संसार के उस पार नहीं जायेगा, उद्धव ! वह सचमुच आत्मघाती पुरुष ही होगा।

(श्री एकनाथी भागवत, अध्याय : २०)

स्वास्थ्य के लिए हानिकर : रात्रि-जागरण

प्रोसीडिंग्ज ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेस' पत्रिका में प्रकाशित एक ब्रिटिश अध्ययन के अनुसार रात्रि-जागरण हमारे शरीर के डीएनए को गम्भीर नुकसान पहुँचाता है। डीएनए हमारी कोशिकाओं के केन्द्र में मौजूद वह महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, जिसमें हमारी आनुवांशिक विशेषताओं की जानकारी होती है। जैसे – हमारे बालों का रंग, आँखों का रंग क्या होगा या हमें कौन-सी बीमारियाँ हो सकती हैं ?

सर्री विश्वविद्यालय (इंग्लैंड) में शोधकर्ताओं ने २२ स्वस्थ लोगों का विश्लेषण किया और उनके सोने के समय में लगातार ३ दिनों तक ४ घंटे की देरी की। शोधकर्ताओं ने यह पाया कि सभी २२ लोगों के जीन्स की लय को गहरा नुकसान पहुँचा है। ९७% से अधिक जीन्स जो पहले तालबद्ध थे, सोने का समय बदलने से अपनी लय खो चुके थे। ये जीन्स हमारे डीएनए का ६% हिस्सा होते हैं और बीमारियों के खिलाफ हमारे शरीर के रक्षाकवच का काम करते हैं। शोधकर्ताओं ने नतीजा निकाला कि लम्बे समय तक रात में काम करना शरीर के लिए गम्भीर स्वास्थ्य-समस्याएँ पैदा कर सकता है।

चल पड़ो, बढ़े चलो...

एक सत्संगी युवक जिस मोहल्ले में रहता था वहाँ लाइट की व्यवस्था नहीं थी, जिससे रात को लोगों को आने-जाने में बहुत दिक्कत होती थी । यह देखकर उसे दुःख होता और वह इस समस्या के निराकरण के बारे में सोचता रहता।

एक दिन उसे युक्ति सूझ गयी और उसने अपने घर के सामने एक बाँस गाड़ दिया और शाम होते ही उस पर एक लालटेन टाँग दी। लालटेन से उसके घर के सामने उजाला हो गया लेकिन लोग उसका मजाक उड़ाने लगे । एक व्यक्ति बोला : ''तुम्हारे एक लालटेन जला देने से कुछ नहीं होगा। पूरे मोहल्ले में तो अँधेरा ही रहेगा !'' उसके घरवालों ने भी उसका विरोध किया कि ''तुम्हारे इस काम से फालतू में पैसा खर्च होगा।'' परंतु वह समझदार युवक अपने इरादे पर दृढ़ रहा। और कुछ ही दिनों में परिणाम यह आया कि उसके प्रयास की सराहना होने लगी। मोहल्ले के दूसरे लोग भी अपने-अपने घरों के सामने लालटेन टाँगने लगे और एक दिन पूरे मोहल्ले में उजाला हो गया।

यह बात पूरे शहर में फैल गयी और नगरपालिका समिति पर चारों तरफ से यह दबाव पड़ने लगा कि वह उस मोहल्ले में रोशनी का इंतजाम करे । इस प्रकार एक युवक के पुरुषार्थ से पूरे मोहल्ले में रोशनी हो गयी।

कुछ दिन बाद नगरपालिका समिति ने उस युवक का सम्मान किया। इस मौके पर जब उससे पूछा गया कि उसके मन में यह खयाल कैसे आया तो उसने कहा : ''मेरे घर के सामने रोज कई लोग अँधेरे में ठोकर खाकर गिरते थे। मैंने सोचा कि मैं ज्यादा तो नहीं लेकिन अपने घर के सामने थोड़ा तो उजाला कर ही सकता हूँ, जिससे लोगों को थोड़ी राहत तो मिलेगी !''

'यह कार्य बहुत बड़ा है, हमारे करने से कुछ होनेवाला नहीं है।' ऐसा सोचकर पुरुषार्थ छोड़ के बैठनेवाले को तो स्वप्न में भी सफलता नहीं मिल सकती परंतु जो व्यक्ति 'करने-करवानेवाला वह एक परमात्मा है' - ऐसा मानता है और सामने आये हुए परहित के कार्य को परमात्मा द्वारा दिया गया सेवा का अमूल्य अवसर समझकर अपनी पूरी शक्ति के साथ लग जाता है, वह कभी असफल नहीं होता। क्योंकि प्रकृति का यह नियम है कि एक समान विचार, भाव, स्वभाव और संकल्प एक-दूसरे को खींचते हैं तथा वह सामूहिक सत्संकल्प ईश्वरीय शक्ति को भी आकर्षित करता है और व्यापक परिणाम ला देता है।

और भी व्यापक स्तर पर मनाया जा रहा है मातृ-पितृ पूजन दिवस

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के आह्वान पर पिछले ८ वर्षों से वैश्विक स्तर पर मनाया जा रहा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' लोगों को कितना भा रहा है इस बात का पता इसीसे लगाया जा सकता है कि इस वर्ष १४ फरवरी आने के पहले ही देश के विभिन्न स्थानों पर मातृ-पितृ पूजन के सामूहिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। भारत को विश्वगुरु बनाने में अहम भूमिका निभानेवाले इस सुंदर पर्व को सभी धर्मों के आचार्यों ने न केवल सराहा है बल्कि अपने कथा-प्रवचनों में भी सामूहिक मातृ-पितृ पूजन का आयोजन करवा के समाज को सही दिशा दिखायी है। रायपुर (छ.ग.) में एक सत्संग-कार्यक्रम में संत बालकदासजी महाराज ने स्वयं अपने माता-पिता की पूजा करके सभीके सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में 'भाजपा महिला मोर्चा' की राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं लोकसभा सांसद, सुश्री सरोज पांडेय भी सम्मिलित हुईं।

शिवधारा आश्रम अमरावती के संत डॉ. संतोष नवलानीजी ने भी अपने माता-पिता का पूजन करके मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने का आह्वान किया। जोधपुर (राज.) के संत श्री कृपारामजी महाराज ने भी १४ फरवरी तक आयोजित होनेवाले सभी कार्यक्रमों में सामूहिक मातृ-पितृ पूजन मनाने की बात कही। इसके अलावा कातरो उतई, धमधा, भिलाई, समोदा जि. दुर्ग, ईमलीडीह-रायपुर, सरोना, गोंदवारा जि. रायपुर, कोटा-रायपुर, महासमुंद, बिजाभाट जि. बेमेतरा, रायपुर (छ.ग.), भोपाल, देवास (म.प्र.), नोयडा, खानपुर-दक्षिण दिल्ली, अलीगढ़, मालब जि. अलीगढ़, कासगंज जि. एटा, तप्पल व खैल जि. अलीगढ़, हाथरस (उ.प्र.), आलंदी जि. पुणे, परतवाड़ा जि. अमरावती (महा.) आदि स्थानों पर भी विशाल रूप से सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' ने झूठी चार्जशीट की होली जलायी

जालंधर (पंजाब) में हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट ने संत श्री आशारामजी बापू का समर्थन करते हुए पुलिस द्वारा बनायी गयी जोधपुर मामले की झूठी चार्जशीट के विरोध में प्रदर्शन किया और चार्जशीट की होली जलायी। वहीं हिन्दू महासभा के प्रधान अश्विनी डोगरा ने कहा कि ''शंकराचार्यजी के समर्थन में बापूजी ने आंदोलन किया था, उसके बाद ही बापूजी पर आरोप लगने शुरू हो गये थे। उन्हें साजिश के तहत फँसाया गया है।''

हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट की बैठक में जेल में बापूजी की सुरक्षा के प्रति चिंता प्रकट की गयी। उन्होंने सुरक्षा विश्वसनीय बनाने की माँग की तथा राष्ट्रपति को इस बारे में ज्ञापन देने का निर्णय लिया। फ्रंट ने कहा कि 'यदि जेल में बापूजी के साथ कुछ अनुचित होता है तो इसकी जिम्मेदार सरकार होगी।'

(संदर्भ : दैनिक भास्कर एवं सवेरा टाइम्स)

खानपान का ध्यान विशेष वसंत ऋतु का है संदेश

(वसंत ऋतु : १८ फरवरी से १९ अप्रैल)

आहार : इस ऋतु में देर से पचनेवाले, शीतल पदार्थ, दिन में सोना, स्निग्ध अर्थात् घी-तेल में बने तथा अम्ल व मधुर रसप्रधान पदार्थों का सेवन न करें क्योंकि ये सभी कफवर्धक हैं।

(अष्टांगहृदय : ३.२६)

वसंत में मिठाई, सूखा मेवा, खट्टे-मीठे फल, दही, आइसक्रीम तथा गरिष्ठ भोजन का सेवन वर्जित है। इन दिनों में शीघ्र पचनेवाले, अल्प तेल व घी में बने, तीखे, कड़वे, कसैले, उष्ण पदार्थों जैसे - लाई, मुरमुरे, जौ, भुने हुए चने, पुराना गेहूँ, चना, मूँग; अदरक, सोंठ, अजवायन, हल्दी, पीपरामूल, काली मिर्च, हींग; सूरन, सहजन की फली, करेला, मेथी, ताजी मूली, तिल का तेल, शहद, गोमूत्र आदि कफनाशक पदार्थों का सेवन करें। भरपेट भोजन न करें। नमक का कम उपयोग तथा १५ दिनों में एक कड़क उपवास स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

विहार : सूर्योदय से पूर्व उठना, व्यायाम, दौड़, तेज चलना, आसन व प्राणायाम (विशेषकर सूर्यभेदी) लाभदायी हैं। तिल के तेल से मालिश कर सप्तधान्य उबटन से स्नान करना स्वास्थ्य की कुंजी है।

वसंत ऋतु के विशेष प्रयोग :

* ५ ग्राम रात को भिगोयी हुई मेथी सुबह चबाकर पानी पीने से पेट की गैस दूर होती है।

* १० ग्राम घी में १५ ग्राम गुड़ मिलाकर लेने से सूखी खाँसी में राहत मिलती है।

* १० ग्राम शहद, २ ग्राम सोंठ व १ ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम चाटने से बलगमी खाँसी दूर होती है।

सावधानी : मुँह में कफ आने पर तुरंत बाहर निकाल दें। कफ बढ़ने पर गजकरणी, जलनेति का प्रयोग करें (पढ़ें आश्रम की पुस्तक 'योगासन')।

सरल प्रयोग

* एक मास तक बिल्व तेल का नस्य लेने से दीर्घायुष्य और कवित्व शक्ति उपलब्ध होती है। (अग्नि पुराण)

* 'गरुडध्वजः' यह नाम विष का हरण करनेवाला है। (अग्नि पुराण)

* **प्रतिदिन प्रातःकाल ५ ग्राम शहद, १० ग्राम घी और २ ग्राम सोंठ का सेवन करनेवाला मनुष्य दीर्घजीवी होता है।**

* २ ग्राम सोंठ चूर्ण दूध में मिलाकर पीने से हृदयगत पीड़ा में आराम मिलता है।

***

गर्मियों में वरदानस्वरूप

हरड़ रसायन योग

लाभ : यह सरल योग ग्रीष्म ऋतु (२० अप्रैल से २० जून तक) में स्वास्थ्य-रक्षा हेतु परम लाभदायी है। यह त्रिदोषशामक व शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है। इसके सेवन से अजीर्ण, अम्लपित्त, संग्रहणी, उदरशूल, अफरा, कब्ज आदि पेट के विकार दूर होते हैं। छाती व पेट में संचित कफ नष्ट होता है, जिसमें श्वास, खाँसी व गले के विविध रोगों में भी लाभ होता है। इसके नियमित सेवन से बवासीर, आमवात, वातरक्त (Gout), कमरदर्द, जीर्णज्वर, गुर्दे के रोग, पीलिया, रक्त की कमी व यकृत के विकारों में लाभ होता है। यह हृदय के लिए बलदायक व श्रमहर है।

विधि : १०० ग्राम गुड़ में थोड़ा-सा पानी मिलाकर गाढ़ी चाशनी बना लें। इसमें १०० ग्राम बड़ी हरड़ का चूर्ण मिलाकर १-१ ग्राम की गोलियाँ बना लें। प्रतिदिन न१ गोली चूसकर अथवा पानी से लें। शरीर मोटा हो तो १ से ४ ग्राम दिनभर में चूसें।

'हरड़ रसायन' सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों, श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है।

होली की बौछार लाये जीवन में बहार

- पूज्य बापूजी

वैदिक, प्राचीन एवं विश्वप्रिय उत्सव

यह होलिकोत्सव प्राकृतिक, प्राचीन व वैदिक उत्सव है। साथ ही यह आरोग्य, आनंद और आह्लाद प्रदायक उत्सव भी है, जो प्राणिमात्र के राग-द्वेष मिटाकर, दूरी मिटाकर हमें संदेश देता है कि हो... ली... अर्थात् जो हो गया सो हो गया।न

जो बीत गयी सो बीत गयी,
तकदीर का शिकवा कौन करे ?
जो तीर कमान से निकल गया,
उस तीर का पीछा कौन करे,
क्यों करे, कब तक करे ? हो... ली...

यह वैदिक उत्सव है। लाखों वर्ष पहले भगवान रामजी हो गये। उनसे पहले उनके पिता, पितामह, पितामह के पितामह दिलीप राजा और उनके बाद रघु राजा... रघु राजा के राज्य में भी यह महोत्सव मनाया जाता था। बापू भी होली खेलते हैं लाखों-लाखों प्यारे भक्तों के साथ !

पलाश का रंग, केसर, चंदन और गुलाब के फूल रगड़कर अकबर भी अपने महल में होली खेलता था लेकिन रानियों के साथ, जहाँगीर भी खेलता था और कई मुसलमान राजा भी होली का उपयोग लेते थे।

अभी अमेरिका में और अलग-अलग देशों में अलग-अलग नामों से इस उत्सव का लाभ लोग उठाते हैं। स्पेन में लोग टमाटरों से होली खेलते हैं। लाखों टन टमाटर इकट्ठे होते हैं और 'दे धमाधम... दे धमाधम...' बकरियों और गायों के लिए तो भंडारा होता होगा लेकिन टमाटर की सब्जी महँगी हो जाती होगी ! लेकिन मैंने न टमाटर से और न ही रासायनिक रंगों से होली खेलना चालू किया बल्कि पलाश के फूलों से चालू किया।

स्वास्थ्यप्रदायक होली

रासायनिक रंगों का तन-मन पर बड़ा दुष्प्रभाव

होता है। काले रंग में लेड ऑक्साइड पड़ता है, वह किडनी को खराब करता है। लाल रंग में कॉपर सल्फेट पड़ता है, वह कैंसर की बीमारी देता है। बैंगनी रंग से दमा और एलर्जी की बीमारी होती है। सभी रासायनिक रंगों में कोई-न-कोई खतरनाक बीमारी को जन्म देने का दुष्प्रभाव है।

लेकिन पलाश की अपनी एक सात्त्विकता है। पलाश के फूलों का रंग रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाता है। गर्मी को पचाने की, सप्तरंगों व सप्तधातुओं को संतुलित करने की क्षमता पलाश में है। पलाश के फूलों से जो होली खेली जाती है, उसमें पानी की बचत भी होती है। रासायनिक रंगों को मिटाने के लिए कई बाल्टियाँ पानी लगता है। सूखा रंग, काला रंग या सिल्वर रंग लगायें तो उसको हटाने के लिए साबुन और पानी बहुत लगता है लेकिन पलाश के फूलों के रंग के लिए न कई बाल्टियाँ पानी लगता है न कई गिलास पानी लगता है। और पलाश वृक्ष की गुणवत्ता सर्वोपरि है। पित्त और वायु मिलकर हृदयाघात (हार्ट-अटैक) का कारण बनता है लेकिन जिस पर पलाश के फूलों का रंग छिड़क देते हैं उसका पित्त शांत हो जाता है तो हार्ट-अटैक कहाँ से आयेगा ? वायुसंबंधी ८० प्रकार की बीमारियों को भगाने की शक्ति इस पलाश के रंग में है।

इस मौसम में सुबह-सुबह २० से २५ नीम के कोमल पत्ते और एक काली मिर्च चबा के खानेवाला व्यक्ति वर्षभर निरोग रहने का प्रमाणपत्र ले लेता है, बाहर नहीं भीतर ही। होली के बाद २०-२५ दिन तक बिना नमक अथवा कम नमकवाला भोजन करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। इन दिनों में सर्दियोंवाला (पचने में भारी) भोजन करना वर्जित है।

आनंदित रहने की प्रेरणा देता पर्व

होली के दिन चैतन्य महाप्रभु का प्राकट्य हुआ था। इन दिनों में हरिनाम कीर्तन करना-कराना चाहिए। लट्ठी-खेंच कार्यक्रम करना चाहिए, यह बलवर्धक है। नाचना, कूदना-फाँदना चाहिए जिससे जमे हुए कफ की छोटी-मोटी गाँठें भी पिघल जायें

और वे ट्यूमर कैंसर का रूप न ले लें। और कोई दिमाग या कमर का ट्यूमर भी न हो। तुम्हारे शरीर में जो कुछ अस्त-व्यस्तता है, वह गर्मी से तथा नाचने, कूदने-फाँदने से ठीक हो जाती है। और फिर होली जले तो गर्मी का भी थोड़ा फायदा लेना, लावा का फायदा लेना और पलाश के फूलों का रंग एक-दूसरे पर छिड़क के अपने चित्त को आनंदित व उल्लसित करना।

ऋषियों ने ऐसी सुंदर व्यवस्था की कि जिससे तुम्हारे जीवन में आनंद व उत्साह बना रहे। व्यर्थ का चिंतन मिटाने के लिए भगवद्चिंतन और फिर भगवद्चिंतन भी शांत होकर निश्चिंत नारायण का आनंद उभरे तो समझ लो गुरु के साथ होली मनाने की कला आ गयी।

होली हुई तब जानिये, पिचकारी गुरुज्ञान की लगे।
सब रंग कच्चे जाँय उड़, एक रंग पक्के में रँगे।

पक्का रंग यह है कि जिसकी कभी मौत नहीं होती, त्रिलोकी का प्रलय हो जाय फिर भी जिसे दुःख नहीं छूता वह **मैं अमर आत्मा हूँ।**

हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप !

एक ही परमात्म-सत्ता है - इस ज्ञान की पिचकारी से जितना-जितना आप परमात्म-ज्ञान में रमण करेंगे, उतना-उतना 'हो... ली...' अर्थात् जो हो गया सो हो गया... आनंद रहेगा, माधुर्य रहेगा, तृप्ति रहेगी, पूर्णता रहेगी।

पूर्ण गुरुकृपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान...

ॐ ॐ ॐ

बाधाएँ कब रोक सकी हैं...

झंझावात प्रबल चलते हों, घटा घिरी हो अँधियारी।
कष्ट मुसीबत जैसी भी हो, जिनको लगती हो प्यारी।
हँसते-हँसते पी सकते जो, तीखे विष के प्यालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को॥
निर्भय सदा विचरते जग में, डरे नहीं जो काल से।
निज मस्ती में मस्त रहें जो, रहें सदा खुशहाल से।
खेल-खेल में पार करें, तूफानी नदियों नालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को॥
उल पुथल कितनी हो फिर भी विचलित जरा नहीं होते।
कितने ही इल्जाम लगें पर, धैर्य न अपना वे खोते।
शांत भाव से देख रहे जो, कुदरत की हर चालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को॥
समय चक्र फिर करवट लेगा, सत्य का डंका गूँजेगा।
एक बार फिर सारा जग यह, बापूजी को पूजेगा।
निंदक जोर लगा ले पूरा, भोंकें काँटें भालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को॥
दृढ़संकल्प शक्ति हो जिनमें, गुरुचरणों में हो अनुराग।
ज्ञान धर्ममय जिनका जीवन, जो रहते हैं सदा सजाग।
आदर स्नेह सभी देते हैं, धर्म के इन रखवालों को।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं आगे बढ़नेवालों को॥

भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ, साथ में खजूर ले जाओ

पूज्य बापूजी की सत्प्रेरणा से इस योजना द्वारा इस वर्ष भी विभिन्न राज्यों के गरीब, बेरोजगार, असहाय वृद्ध, विकलांग आदि लाभान्वित हो रहे हैं । इसके अंतर्गत उन्हें भगवन्नाम-जप, कीर्तन व सत्संग लाभ लेना होता है । इसके बदले में उन्हें दोपहर को भरपेट भोजन व शाम को ४०-५० रुपये नकद दक्षिणा दी जाती है । गरीब लोगों की सेहत भी बढ़िया हो इसलिए बापूजी सर्दियों में खजूर बँटवाते रहे हैं और गर्मियों में आँवला रस, आँवला शरबत, गुलाब शरबत बँटवाते रहे हैं । पूज्य बापूजी के निर्देशानुसार इस योजना के अंतर्गत गरीबों को भोजन, दक्षिणा व १-१ किलो खजूर के साथ १-१ बोतल आँवला शरबत भी दिया गया । कुछ झलकियाँ :

मझगुवाँ, जि. सागर (म.प्र.)

कंधकेलगाँव (ओड़िशा)

सिरसिल्ला (आं.प्र.)

अहमदाबाद

लड़ूगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)

बलांगीर (ओड़िशा)

पुरी (ओड़िशा)

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

गोरा खुर्द, जि. सागर (म.प्र.)

निवाई (राज.)

अम्बाजी (गुज.)

ढोराला, जि. उस्मानाबाद (महा.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

दिल्ली में 'संत महासभा' द्वारा आयोजित संत-सम्मेलन के बाद निर्दोष पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं एवं साधकों की रिहाई तथा अन्य हिन्दुत्ववादी मुद्दों को लेकर राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन दिया गया।

पूज्य बापूजी की रिहाई हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर हो रहे वैदिक हवन-यज्ञों की कुछ झलकियाँ

अहमदाबाद

राजकोट (गुज.)

नागपुर (महा.)

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

भावनगर (गुज.)

बड़ौदा

रायपुर

बोईसर, जि. ठाणे (महा.)

पूज्य बापूजी पर हुए अन्याय के विरोध में देश के विभिन्न स्थानों पर हो रही रैलियों की कुछ झलकियाँ

रोहिणी, दिल्ली

रायपुर

पुणे (महा.)

नांगलोई, दिल्ली

पटना

जलगाँव (महा.)

बुराड़ी, दिल्ली

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।